उपसंहार

उपसंहार

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का अनुशीलन ('चिन्हार' और 'ललमनियाँ' के विशेष संदर्भ में) के अध्ययन करने के उपरांत निष्कर्ष रूप में जो तथ्य सामने आतेहै उनका निचोड यहाँ सार रूप में प्रस्तुत हैं। रचनाकार का साहित्य उसके अध्ययन, मनन, चिंतन, अनुभवों का निचोड होता हैं जो प्रतिभा का स्पर्श पाकर कलात्मक उच्चाईयाँ प्राप्त कर अभिव्यक्ति पाता है। अत: मैंने प्रथम अध्ययन में मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों के कथावस्तु को लिया है।

''मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का कथावस्तु का अध्ययन'' के अंतर्गत उनके साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है जिससे पता चलता है कि यह आधुनिक काल की लेखिका है। 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' इन कहानी संग्रह में कुल तेईस (२३) कहानियाँ संग्रहित है। इसमें से एक कहानी 'मैं सोचती हूँ की.....' निबंध शैली के रूप में सामने आती है। उनकी कहानियों में जमींदारो के खिलाफ विद्रोह दिखाई देता है, जो राजनीतिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार के रूप में उभरकर सामने आता है। 'केतकी', 'पगला गयी है भागवती', 'सेंध', 'रिजक', 'बहेलिये', 'हवा बदल चुकी है' आदि कहानियों में भ्रष्टाचार का विरोध किया गया है। उनकी कहानियों में नारी एक स्वतंत्रता की पक्षधर है। 'अब फूल नहीं खिलते' कहानी में नारी ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाने का प्रयत्न किया है। 'अपना-अपना आकाश', 'सिस्टर', 'ललमनियाँ' आदि कहानियों में नारी स्वाभिमानी रूप में उजागर होती है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में सिर्फ राजनीतिक भ्रष्टाचार व्यवस्था का ही चित्रण नहीं हुआ बल्कि इनकी कहानियों में प्रेम का पवित्र पक्ष भी उजागर होता है जो 'मन नाँहि दस-बीस', 'सहचर', 'सफर के बीच' आदि कहानियों में दिखाई देता अत: नारी बलिदान

रूप पर दृष्टिगोचर होता है, जो 'चिन्हार' कहानी में मातृत्व का बलिदान करती है और 'भँवर' कहानी में मातृत्व के लिए तरसी नायिका अंकित होती है। मातृत्व के प्यार के लिए तरसी तुम किसकी हो बिन्नी कहानी की नायिका सामने आती है तो मातृत्व की कीमत पहचानकर दूध का कर्ज चुकाने आयी 'बेटी' कहानी की नायिका उजागर होती है। खोखले रिश्तों का दिखावटी करनेवाले रूप में का यथार्थ अंकन हमें 'कृतज्ञ', 'छाँह' कहानी में प्रस्तुत होता है और माँ बाप पर अपने आपको बोझ समझने वाला 'बोझ' कहानी का छोटा बच्चा (नायक) दृष्टिगोचर होता है। अत: मैत्रेयी पुष्पा की कहानियाँ मध्यवर्गीय जीवन की यथार्थ वास्तव स्थिति को उजागर करती है।

''मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का चरित्रगत अध्ययन'' के अंतर्गत उनके साहित्य को परखने के उपरांत पता चलता है कि, कुल-मिलाकर बाईस कहानियों में प्रमुख पात्र पंतालिस-चालीस हैं और गौण पात्र पच्चीस-तीस इस दरमियान प्रस्तुत होते हैं। इन सभी पात्रों की प्रवृत्तियों के आधार पर उनकी मानसिकता को जाँचा गया है और उनके चरित्रों का विश्लेषित किया है। इन पात्रों का चरित्रगत अध्ययन करने से पहले कहानी के पात्रों के चरित्र-चित्रण का स्वरूप, कहानी की पात्र-योजना, कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्त्व आदि बातों की सैद्धांतिक जानकारी प्रस्तुत की गयी है। उसके पश्चात पात्र के चरित्र गत अध्ययन को विश्लेषित किया गया है। विश्लेषण का आरंभ नारी पात्र, पुरूष पात्र, गौण पात्र के रूप में उजागर होते हैं। निडर, निस्वार्थी, स्वाभिमानी, विवेकबुद्धि, अन्याय-अत्याचार, भ्रष्टाचार का विरोध करनेवाली, नारी के रूप में बसुमति, केतकी, गिरजा, भागवती (भागो), लल्लन, झरना आदि नारियाँ दृष्टिगोचर होती है तो अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार को साथ देनेवाली बैहरी सामने आती है साथ ही निस्वार्थी, सेवाभावी, अकेली, परिश्रमी, निष्काम भावना से दूसरों की सेवा करनेवाली डोरोथी डिसूजा, लल्लन उजागर होती है। मातृत्व की आस लिए

तरसी विरमा स्नेहशील, संयमी, आकांक्षा, धरनेवाली, नारी के रूप में अंकित है और न चाहकर भी मातृत्व का बलिदान करनेवाली सरजू प्रस्तुत होती है । अपनी माँ को पहचाननेवाली कनक भी यहाँ दृष्टिगोचर होती है। माँ का प्यार पाने के लिए कैन सा भी पर्व पार करनेवाली बिन्नी, एक छोटी बच्ची होकर भी परिश्रमी, संवेदनशील, आकांक्षा, संजोयी हुयी उजागर होती है तो परिवार के जिम्मेदारी को समझकर उसका पालन करनेवाली मुन्नी को भी मैत्रेयी पुष्पा ने अंकित किया है । जाति-पाति का बंधन तोडकर प्यार करनेवाली चंदना, हेमन्ती संवदेनशील, नीडर, नारी के रूप में दृष्टिगोचर होती हैं , तो पति को हर संकट में साथ देनेवाली छबीली आँखों के सामने प्रस्तुत होती है , ये सारे नारी पात्र अपने अस्तित्व की लडाई लडते है। अन्याय-अत्याचार करनेवाले जमींदार के रूप में रनवीर, प्रिसिंपल, गंधर्वसिंह अंकित है। स्वार्थी, लालची रूप में केशव, अनुपम प्रस्तुत हुए हैं। अन्याय-अत्याचार का विरोध करनेवाले श्रीगोपाल, सुजान ठाकुर, गिरराज, विशालनाथ उजागर होते है। खोखले रिश्तों को पालने वाले सुरेशचन्द, माधोठाकुर होते हैं। प्यार के नाम पर मिटनेवाले बंसी, स्वराज, गिरराज आदि पात्र अंकित है। प्रमुख पात्र के रूप में यह पात्र अंकित होते हैं और मुख्य पात्रों को सँभाले हुए, कहानी की रोचकता बढाने का काम, अपना अस्तित्व बनाए गौण पात्र दृष्टिगोचर होते है। अत: पात्र अपनी सूक्ष्मता, निरीक्षण शक्ति विश्वसनीयता का परिचय देते हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने मध्यवर्गीय, पीडित, आरक्षित पात्रों को अधिक मात्रा में अंकित किया है। साथ ही पात्रों का चरित्रात्मक विकास भी अत्यंत स्वाभाविक गति से हुआ है ऐसा प्रतित होता है।

''मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का परिवेश'' के अंतर्गत उनके साहित्य में चित्रित वातावरण, परिवेश एवं परिस्थितियों के अंकन में उनके अपने जीवनानुभवों का कितना

योगदान है, यह बात यहाँ प्रस्तुत होती है। इन पात्रों का अध्ययन करने से पूर्व परिवेश का स्वरूप, परिवेश के गुण, परिवेश के भेद, परिवेश का महत्त्व आदि बातों की सैद्धांतिक जानकारी प्रसतुत की गयी है। उसके पश्चात कहानी का परिवेशगत अध्ययन का विश्लेषण किया गया है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों में मध्य वर्ग का चित्रांकन करके मध्यवर्गीय जीवन के पारिवारिक माहौल एवं विसंगतियों का अंकन किया है साथ ही मैत्रेयी पुष्पा ने बदलते माहौल, परिस्थितियाँ तथा गाँव के जीवन, शहरी जीवन आदि का परिवेश अंकित करने का प्रयास किया है। आधुनिक काल में जो मुख्यत: राजनीतिक आतंक का कॉलेज जीवन आदि का अंकल परिवेश के अंतर्गत किया गया है। 'फैसला' और 'बहेलिये' कहानी में राजनीतिक परिवेश अंकित है।'हवा बदल चुकी है'कहानी में आतंक का परिवेश प्रस्तुत होता है। 'छाँह'कहानी में जातीयता के कारण जो दंगल होती है, उसका परिवेश अंकित है। 'सिस्टर' और 'रिजक' कहानी में अस्पताल का परिवेश सामने उजागर होता है।'अब फूल नहीं खिलते'और'चिन्हार' कहानी में कॉलेज का परिवेश अंकित है। 'बहेलिये', 'अपना-अपना आकाश' कहानी में शहरी परिवेश दृष्टिगोचर होता है। और 'सेंध', 'पगला गयी है भागवती', 'बेटी', 'सहचर', 'मन नाँहि दस बीस' आक्षेप आदि कहानियों में गाँव का परिवेश अंकित है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में पारिवारिक परिवेश अंकित है। 'तुम किसकी हो बिन्नी', 'ललमनियाँ', 'भँवर' आदि कहानियों में पारिवारिक परिवेश उभरकर सामने आता है। अत: मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में परिवेश का चित्रण अत्यंत सार्थक रूप में हुआ है। यथार्थ शैली के सहारे परिवेश में मैत्रेयी ने जान भर डाली है। यह परिवेश जिंदा बनकर पाठकों के सामने उभर उठता है।

''मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों की भाषा-शैली का अध्ययन'' के अंतर्गत हम कह सकते

हैं कि उनकी भाषा में एक निखार और शैलियों के अनेक प्रकार अंकित हैं लेकिन इन कहानियों की भाषा-शैली का अध्ययन करने से पूर्व कहानियों की भाषा शैली, भाषा के गुण,शैली के गुण, कहानी के भाषा के विविध रूप, कहानी की प्रमुख शैलियाँ, भाषा का महत्त्व, शैली का महत्त्व आदि बातों की सैद्धांतिक जानकारी यहाँ प्रस्तुत की गयी है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में भाषा-शैली अत्यंत सुंदर एवं सजीव बन गयी है। उनकी भाषा में शब्द प्रयोग के विभिन्न रूप जैसे-अरबी शब्द, फारसी शब्द, देशज शब्द, इंग्रजी शब्द, संस्कृत शब्द, इंग्रजी वाक्य आदि दिखाई देते है ग्रामीण पता बुंदेलखंडी बोली का प्रयोग करते हैं और वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, आत्मकथात्मक, संवादात्मक, पत्रात्मक, काव्यात्मक, स्मृतिपरक आदि शैलियों का प्रयोग किया है। अत: भाषा-शैली की दृष्टि से मैत्रेयी पुष्पा की आलोच्य कहानी संग्रहो की कहानियाँ सफल हो गयी है।

"मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का उद्देश" के अंतर्गत यह दृष्टिगोचर होता है कि, मैत्रेयी पुष्पा ने सिर्फमनोरंजन के एक मात्र उद्देश्य से कहानियाँ नहीं लिखी हैं बल्कि नारी समस्या का अंकन, स्वार्थी लोगों का वर्णन, बुजुर्गों की उपेक्षा, रिश्तों में खोखलापन, भ्रष्टाचार, अन्याय-अत्याचार आदि की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करने के उद्देश्य से कहानियाँ लिखी है। मैत्रेयी पुष्पा का मुख्य उद्देश्य नारी को समाज के सामने उजागर करता है। निष्कर्ष के निचोड के रूप में हमें निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती है -

1) नारी की मुक्ति आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हुए बिना संभव नहीं है। अत:नारी के लिए आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होना अत्यंत आवश्यक है। इस धारणा को मैत्रेयी ने यहाँ प्रस्तुत किया है।

2) नारी की परंपरागत जडता, रूढिवादिता दूर होनी चाहिए और नारी को समय के साथ चलकर अपने ढंग से स्वयं की, देश और समाज की समस्याओं को हल करने में योग देना

चाहिए इस पर उन्होंने जोर दिया है।

3) जाति, धर्म के भेदों से परे मानव की विशुद्ध, मानव रूप में देखना न केवल मानवता को गरिमा प्रदान करता है वरन, राष्ट्रीय, सामाजिक और धार्मिक समस्याओं का हल भी प्रस्तुत करता है, अत: मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा आवश्यक है। इसे आलोच्य कहानियों द्वारा उन्होंने स्पष्ट किया है।

4) बाल विवाह, अनमेल विवाह, जैसी कुप्रथा कानूनी तौर पर रोकना आवश्यक है। इस पर मैत्रेयी जोर देना चाहती है।

5) सामाजिक, आर्थिक, तथा राजनीतिक प्रगति के लिए नारी समानता आवश्यक है।

6) नारी के सामाजिक स्तर को ऊँचा बनाने के लिए तथा परस्वाधीनता से नारी को दूर करने के लिए औरतों को शिक्षा की आवश्यकता है, इस पर उन्होंने बल दिया है।

मैत्रेयी पुष्पा ने समकालीन समाज के बदलते स्वरूप का ही चित्रण किया है। इसके साथ ही नारी संबंधी अनेक समस्याओं का चित्रण भी इनके कहानियों में विशदता से मिलता है। इनके कहानियों में नारी मन का उहापोह चित्रण उजागर होता है। लेखिका नारी स्वतंत्रता की पक्षधर है। इनके नारी पात्र एक ओर त्याग और बलिदान के रूप में चित्रित है तो दूसरी ओर रूढी परंपरा के निर्वाह में आबद्ध नारी लगते है। इनकी कहानियाँ प्रमुखत: समसामायिक जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण दस्तावेज लगती है। साथ ही पुरूषों का स्वार्थी, अन्याय-अत्याचारी, भ्रष्टाचारी, लालची आदि रूपों में अंकित हैं।

''मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में चित्रित समस्याएँ'' के अंतर्गत इनकी कहानियों में विविध मुखी समस्याओं को चित्रित किया गया है उसी प्रकार उन समस्याओं के निराकरण के संकेत भी दिए गए हैं। इनकी कहानियों के समस्याओं का अध्ययन सामाजिक समस्या, राजनीतिक समस्या, आर्थिक समस्या, सांस्कृतिक समस्या के रूप में प्रस्तुत होते है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों में नारी संबंधित सामाजिक, पारिवारिक,आर्थिक, अनमेल विवाह आदि विषयक तथा आंतरजातिय विवाह विषयक, प्रेम विषयक, संतान के अभाव से पीडित नारी विषयक अनेक समस्याओं को प्रस्तुत किया है। लेखिका ने देशकाल की अपेक्षा पारिवारिक समस्याओं में नारी समस्या की ओर अधिक ध्यान दिया है। में 'भँवर', 'तुम किसकी हो बिन्नी', 'फैसला','बहेलिये','केतकी'आदि कहानियों में नारी अंकित है। 'बेटी' कहानी में नारी शिक्षा समस्या उजागर होती है। उच्चवर्गीय शिक्षित नारी की समस्या 'अब फूल नहीं खिलते' कहानी में अंकित है। मातृत्व की समस्या 'भँवर' कहानी में दृष्टिगोचर होती है। प्रेम समस्या 'मन नाँहि दस बीस', 'सहचर', 'पगला गयी है भागवती' कहानी में उजागर होती है। अकेलेपन की समस्या 'अपना अपना आकाश', 'सिस्टर', 'बोझ', 'छाँह' कहानियाँ में अंकित हैं। दांपत्यकी समस्या 'चिन्हार', 'छाँह' कहानी में उजागर होती है। खोखले दिखवटी रिश्तों की समस्या 'सिस्टर' कहानी में सामने आती है। निम्न वर्ग की समस्या 'ललमनियां' कहानी में अंकित है। भ्रष्टाचार की समस्या 'बहेलिये', 'केतकी', 'फैसला', 'सेंध' आदि कहानियों में अकित हैं। चुनाव समसरूा फैंसला', 'हवा बदल चुकी है' कहानियेां में दृष्टिगोचर होती हैं। आर्थिक समस्या 'कृतज्ञ', 'बोझ' कहानीयों में यौन समस्या 'आक्षेप' कहानी में सामने आती है। सांस्कृतिक समस्या 'ललमनियाँ', और प्रचलित परंपराओं की समस्या 'रिजक' कहानी में अंकित है।

उक्त समस्याओं को देखने के बाद स्पष्ट रूप में हम कह सकते है कि मैत्रेयी पुष्पा ने जीवन की समस्याओं को अपने साहित्य में सजगता के साथ प्रस्तुत करने में सफलता पायी है। इनकी समग्र साहित्य सेवा उनकी प्रामाणिकता, संवेदनशीलता, भावुकता को ही प्रतिबिंबित करती है। कुलमिलाकर हम यह कह सकते हैं कि मैत्रेयी पुष्पा की आलोच्य

कहानियाँ कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, परिवेश, भाषाशैली, उद्देश्य, समस्या की दृष्टि से पूरी तरह से सफल हो चुकी है। इस कारण हम यह कह सकते है कि मैत्रेयी पुष्पा की कहानियाँ शिल्प की दृष्टिसे आधुनिक युग का प्रतिनिधित्व करनेवाली कहानियाँ हैं जो एक महिला कहानीकार को उच्चता के शिखर पर पहुँचाने वाली सीढी है। साथही मैत्रेयी पुष्पा के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित कहानियाँ इन आलोच्य कहानी संग्रहो में ली है जो पढने पर दु:खी भी करती है और सुख भी पहुँचाती है। कथ्य की गंभीरता एवं संवेदना की गहराई के कारण हमारा मन भटक जाता है। इन कहानियों को पढकर एक बैचेनी हमारे मन पर छा जाती है। एक सफल कहानीकार के रूप में मैत्रेयी पुष्पा का आधुनिक महिला कथाकारों में प्रभावी स्थान लगता है।